



## ऋग्वेद मण्डल-5

ऋग्वेद मन्त्र 5.20.1

Rigveda 5.20.1

यमग्ने वाजसातम त्वं चिन्मन्यसे रयिम्।  
तं नो गीर्भिः श्रवाय्यं देवत्रा पनया युजम्॥

(यम) जिसको (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान्, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (वाजसातम) उत्तम सम्पदा, शक्ति और बल का देने वाला (त्वम्) आप (चित्) भी (मन्यसे) जानता है (रयिम्) महिमावान् सम्पदा (तम्) उसको (नः) हमें (गीर्भिः) वैदिक वाणियाँ (श्रवाय्यम्) सुनने योग्य (देवत्रा) दिव्यताओं के बारे में (पनया) उपलब्ध कराता है (युजम्) संयुक्त करता है।

नोट :- यह मन्त्र एक शब्द के परिवर्तन के साथ यजुर्वेद 19.64 में है। इस मन्त्र में प्रयुक्त 'वाजसातम' के स्थान पर यजुर्वेद 19.64 में 'कव्यवाहन' का प्रयोग किया है। 'कव्यवाहन' का अर्थ है – दिव्य ज्ञान का धारण करने वाला।

व्याख्या :-

दिव्य ऊर्जा, 'अग्नि', से हम क्या चाहते हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान्, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य, उत्तम सम्पदा, शक्तियों और बलों का देने वाला, दिव्य ज्ञान और वैदिक वाणियों की महिमावान् सम्पदा के बारे में आप जो कुछ भी जानते हो, जो सभी दिव्यताओं के बारे में सुनने योग्य है, कृपया उसे अपने साथ हमारी संगति के लिए उपलब्ध कराओ।

जीवन में सार्थकता :-

हम एक शुद्ध साधक किस प्रकार बन सकते हैं?

केवल दिव्य शक्तियाँ ही हमें दिव्यता प्रदान कर सकती हैं। इसके लिए एक ही शर्त है कि हम पथ भ्रमित हुए बिना दिव्यताओं को प्राप्त करने के लिए स्वयं को उस लक्ष्य का एक शुद्ध साधक बनाने के लिए कड़ी मेहनत और प्रयास करें। कोई व्यक्ति केवल और केवल सर्वोच्च शक्ति के प्रति पूर्ण श्रद्धा के साथ ही शुद्ध साधक बन सकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



## R. V. 5.24.1

ऋग्वेद मन्त्र 5.24.1

Rigveda 5.24.1

अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भवा वरुथ्यः ।।।

(अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान्, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (त्वम्) आप (नः) हमारे (अन्तमः) गहरे आन्तरिक (अन्दर का सब कुछ जानते हुए) (उत) और (त्राता) संरक्षक, बचाव करने वाला (शिवः) कल्याण करने वाला (भवा) हो (वरुथ्यः) सर्वोत्तम आवरण ।

नोट :- ऋग्वेद 5.24.1 से 4 तक यजुर्वेद 3.25 और 26, 15.48 तथा सामवेद 448, 1107 और 1108 में निम्न प्रकार से आये हैं :-

ऋग्वेद 5.24.1 तथा 2 का संयुक्त रूप यजुर्वेद 3.25 है ।

ऋग्वेद 5.24.4 तथा 3 का संयुक्त रूप यजुर्वेद 3.26 है ।

ऋग्वेद 5.24.1, 2 तथा 4 का संयुक्त रूप यजुर्वेद 15.48 है ।

ऋग्वेद 5.24.1 और सामवेद 448 समान हैं ।

ऋग्वेद 5.24.1 तथा सामवेद 1107 समान है ।

ऋग्वेद 5.24.2 तथा सामवेद 1108 समान है ।

ऋग्वेद सूक्त 5.24 को उचित प्रकार से समझने के लिए कृपया यजुर्वेद 3.25 और 26 को देखें ।

व्याख्या :-

हमारा गहरा आन्तरिक सहभागी कौन है?

हे सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान्, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य! आप हमारे गहरे आन्तरिक हो जो अन्दर से हमारा सबकुछ जानते हो और सभी सुविधाओं में हमारे संरक्षक बनकर हमारा बचाव करते हो । कृपया हमारे कल्याण के लिए हमारे सर्वोत्तम आवरण बन जाओ ।

सूक्ति 1 :-

(अग्ने त्वम् नः अन्तमः उत त्राता । ऋग्वेद 5.24.1, यजुर्वेद 3.25, सामवेद 448, 1107)

हे सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान्, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य विद्वान्! आप हमारे गहरे आन्तरिक हो जो अन्दर से हमारा सबकुछ जानते हो और सभी सुविधाओं में हमारे संरक्षक बनकर हमारा बचाव करते हो ।

सूक्ति 2:-

(शिवः भवा वरुथ्यः । ऋग्वेद 5.24.1, यजुर्वेद 3.25, सामवेद 448, 1107)

कृपया हमारे कल्याण के लिए हमारे सर्वोत्तम आवरण बन जाओ ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



**ऋग्वेद मन्त्र 5.24.2**

**Rigveda 5.24.2**

वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमं रयिं दाः॥

(वसुः) सबका आवास (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (वसु) सबका आवास (श्रवा) श्रवण शक्ति (अच्छा) उत्तम (नक्षि) सर्वत्र विद्यमान (द्युमत्तमम्) प्रकाश के साथ संयुक्त (रयिम्) गौरवशाली सम्पदा (दाः) प्रदान करो।

नोट :- ऋग्वेद सूक्त 5.24 के चारों मन्त्रों को उचित प्रकार से समझने के लिए कृपया यजुर्वेद 3.25 और 26 को देखें।

व्याख्या :-

वह, 'अग्नि' हमारे लिए क्या कर सकता है?

आप ऊर्जा के रूप में सर्वत्र विद्यमान हो। आप श्रवण शक्ति के रूप में विद्यमान हो जिससे हम आपको सुन सकें। आप सर्वत्र उत्तम प्रकार से विद्यमान हो। कृपया हमें प्रकाश से संयुक्त गौरवशाली सम्पदा प्रदान करो।

सूक्ति :-

(वसुः अग्निः वसु श्रवा । ऋग्वेद 5.24.2, यजुर्वेद 3.25, 15.48, सामवेद 1108)

आप ऊर्जा के रूप में सर्वत्र विद्यमान हो। आप श्रवण शक्ति के रूप में विद्यमान हो जिससे हम आपको सुन सकें।

**ऋग्वेद मन्त्र 5.24.3**

**Rigveda 5.24.3**

स नो बोधि श्रुधी हवमुरुष्या णो आघायतः समस्मात्॥

(सः) वह (आप) (नः) हमें (बोधि) अनुभूति के साथ संयुक्त (श्रुधी) सुनो (हवम्) हमारी प्रार्थनाएँ (यज्ञों से जुड़ी हुई, सुनने योग्य) (उरुष्या) कृपया पृथक करो (नः) हमें (आघायतः) दूसरों को कष्ट देने वाले पापों से, पापियों से (समस्मात्) सभी प्रकार के।

नोट :- ऋग्वेद सूक्त 5.24 के चारों मन्त्रों को उचित प्रकार से समझने के लिए कृपया यजुर्वेद 3.25 और 26 को देखें।

व्याख्या :-

यज्ञ कार्यों के लिए हमारी प्रार्थनाएँ कौन सुनता है?

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



वह, 'अग्नि', अनुभूति के साथ हमारे संघ जुड़ता है और हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है (यज्ञ कार्यों के लिए सुनने योग्य)। कृपया हमें पूर्ण रूप से उन सभी पापों से पृथक करो जो दूसरों को कष्ट देते हैं और सभी पापियों से भी।

सूक्ति-1 :-

(सः नः बोधि श्रुधी हवम् । ऋग्वेद 5.24.3, यजुर्वेद 3.26)

वह, 'अग्नि', अनुभूति के साथ हमारे संघ जुड़ता है और हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है (यज्ञ कार्यों के लिए सुनने योग्य)।

सूक्ति-2 :-

(उरुष्या नः आघायतः समस्मात् । ऋग्वेद 5.24.3, यजुर्वेद 3.26)

कृपया हमें पूर्ण रूप से उन सभी पापों से पृथक करो जो दूसरों को कष्ट देते हैं और सभी पापियों से भी।

**ऋग्वेद मन्त्र 5.24.4**

**Rigveda 5.24.4**

तं त्वा शोचिष्ट दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः ॥

(तम्) वह (त्वा) आपको (शोचिष्ट) अत्यन्त शुद्ध (दीदिवः) दिव्यता के स्वप्रकाशित प्रकाश का देने वाला (सुम्नाय) सुखों और प्रसन्नताओं के लिए (नूनम्) निश्चित रूप से (ईमहे) प्रार्थना (सखिभ्यः) श्रेष्ठ मित्रों के लिए।

नोट :- ऋग्वेद सूक्त 5.24 के चारों मन्त्रों को उचित प्रकार से समझने के लिए कृपया यजुर्वेद 3.25 और 26 को देखें।

व्याख्या :-

दिव्यता के स्वप्रकाशित प्रकाश का दाता और पूरी तरह से शुद्ध कौन है?

हम अपने श्रेष्ठ मित्रों के लिए सभी सुखों, प्रसन्नताओं की प्रार्थना उस आपसे करते हैं जो पूरी तरह से शुद्ध और दिव्यताओं के स्वप्रकाशित प्रकाश का दाता है।

**This file is incomplete/under construction**

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



# पवित्र वेद

## स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on [thevedicpedia@gmail.com](mailto:thevedicpedia@gmail.com) or whatsapp 0091-9968357171